www.thearyasamaj

No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 38
सृष्टि संवत् 1960853114
22 दिसम्बर 2013
दयानन्दब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 38, 19/22 दिसम्बर 2013 तदनुसार 8 पौष सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

23 दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष-

अमर शहीद-स्वामी श्रद्धानन्द

-ले० श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

देश और धर्म की बलिवेदी पर जिन अमर हुतात्माओं ने अपने प्राणों की बलि चढ़ाई है, उनमें स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती का नाम अग्रगण्य है। स्वामी श्रद्धानन्द जिनका पूर्व नाम मुन्शीराम था, भारत माता के सच्चे सपूत थे, जिन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिए ही नहीं, बल्कि राष्ट्र की सामाजिक,धार्मिक एवं राजनीतिक दशा सुधारने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सच्चे अनुयायी आर्य समाज एवं महर्षि की मान्यताओं के प्रचार व प्रसार में तन-मन-धन, मनसा वाचा कर्मणा कटिबद्ध हो गए। स्वामी श्रद्धानन्द जी का प्रारम्भिक जीवन मुन्शीराम के रूप में उच्छृंखलताओं से परिपूर्ण था लेकिन युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सान्निध्य ने मुन्शीराम का जीवन ही पूर्णरूपेण बदल डाला। एक नास्तिक तथा भ्रष्ट पथ के अनुयायी को स्वामी दयानन्द जी के प्रथम दर्शन ने ही अगाध आस्तिक बना दिया तथा मुन्शीराम के जीवन में ऐसी जीवन शक्ति का संचार हुआ कि आगे चलकर वह समस्त विश्व का पथ प्रदर्शक बन गया। कृण्वन्तो विश्वमार्यम का सिंहनाद करने वाला वह बहादुर सेनानी करनी और कथनी में भेद नहीं मानता था। जब उसने आर्य समाज की मान्यताओं की प्रतिस्थापना समस्त धरती पर करने का संकल्प लिया तो अपने गुरू दयानन्द की तरह सच्चा सैनिक बनकर निकल पड़ा और इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी सफलताओं का मानदण्ड स्थापित कर दिया। स्वामी दयानन्द जी के उपरांत आर्य समाज की सफलताओं में चार चांद जिन अमर बलिदानियों ने लगाए उनमें स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्थान नि:संदेह सर्वोपरि है। यथा नाम तथा गुण कहावत को चरितार्थ करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द श्रद्धा एवं आनन्द की साक्षात् मूर्ति थे। सारा संसार उनका अपना था और सारे संसार की भलाई के लिए उद्यत रहते थे। वैदिक धर्म के प्रचार के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अनेक कदम उठाए।

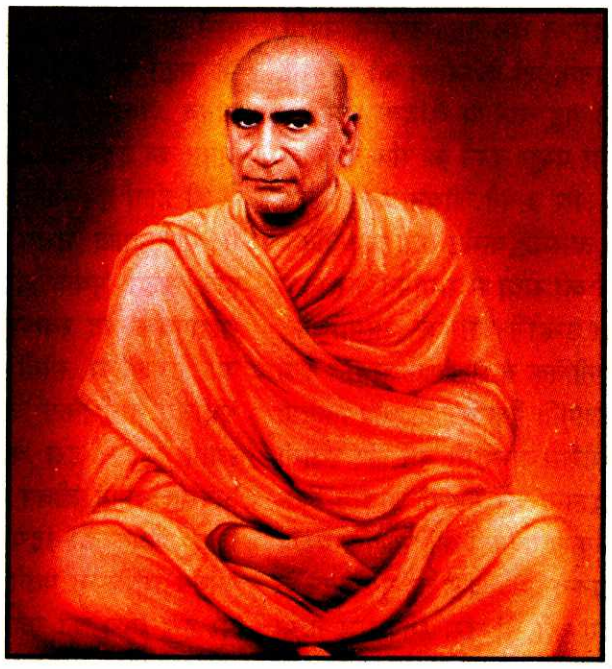

स्वामी श्रद्धानन्द जी की आस्था थी कि राष्ट्र एवं समाज का सुधार तभी सम्भव है जब बच्चों का सुधार किया जाए। इसी आस्था से अभिभूत होकर स्वामी श्रद्धानन्द ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक सिद्धान्तों हेतु गुरूकुल खोलने का बीड़ा उठाया। संसार प्रसिद्ध गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय इस बात का साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन कितना तपस्वी, त्यागमय, निष्ठामय था। भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता के इस अनन्य उपासक ने गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के रूप में राष्ट्र को जो संस्था समर्पित की है, वह भारत राष्ट्र का एक गौरव है। महात्मा गांधी जब पहली बार गुरूकुल पधारे तो अत्यन्त कारूणिक दृश्य उपस्थित था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के समक्ष नतमस्तक होकर अपनी आँखों से अश्रुधारा छोड़ते हुए कहा-महात्मन् आपने मेरी आँखों के सामने प्राचीन भारत का दृश्य उपस्थित कर दिया है। यही नहीं स्वामी श्रद्धानन्द में राष्ट्रप्रेम प्रति क्षण उद्वेलित होता रहता था। भारत के स्वाधीनता संग्राम में स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने साथ गुरूकुल को झोंक दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान भरे जीवन से प्रेरित होकर ही आर्य समाज के हजारों नौजवान भारत की आजादी के लिए क्रान्ति पथ के पथिक बने थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हर कदम पर महात्मा गांधी के आन्दोलनों में भी बराबर हिस्सा लिया था। वे वीरता तथा साहस की प्रतिमूर्ति थे। दिल्ली के चांदनी चौक में आजादी के लाखों दीवानों का नेतृत्व करते हुए उस बहादुर सेनापति ने अंग्रेजी संगीनों के समक्ष अपना सीना खोलकर ललकारा था। स्वामी श्रद्धानन्द जी साम्प्रदायिक सद्भावना के भी प्रतीक थे। दिल्ली की जामा मस्जिद से मुस्लिम भाईयों को उनका सम्बोधन इतिहास की वस्तु बन चुका है। वे चाहते थे कि सारी धरती पर प्यार एवं करूणा का प्रवाह हो, सहिष्णुता एवं सद्भावना का उद्भव हो, वैदिक धर्म की पताका के नीचे सारी धरती के लोग इकट्ठे होकर सुख, समृद्धि एवं सफलता का जीवन व्यतीत करें।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि आन्दोलन को भी जन्म दिया। यह आन्दोलन न केवल धार्मिक था, अपितु इसके पीछे राष्ट्रीय एकता की दूरदर्शिता काम कर रही थी। स्पष्ट था कि मुस्लिम तथा ईसाई मतों के प्रचार के नाम पर देश में राष्ट्रीयता विरोधी तत्व तथा भावनाएं पनप रही थी। अंग्रेज शासक इन्हें अपने साम्राज्यवादी प्रयोजनों की सिद्धि के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जैसा महारथी किसी लौकिक शक्ति का मुंह देखकर अपनी आत्मा की पुकार को दबाने वाला नहीं था। उन्होंने तथाकथित देशभक्त लोगों का रोष एवं क्षोभ मोल लेकर भी शुद्धि आन्दोलन को तीव्र किया। हजारों की संख्या में मुसलमान एवं ईसाईयों को वैदिक धर्म में दीक्षित करके भारतीय संस्कृति का उपासक तथा राम कृष्ण का अनुयायी बनाया। उनके दिव्य चक्षु उस खतरे को देख रहे थे कि जब मजहब के नाम पर विदेशी वासनाओं से ग्रस्त करोड़ों लोग देश की स्वाधीनता का विरोध करेंगे और उसी के आधार पर देश के विभाजन की मांग उठेगी।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

www.thearyasamaj.org

श्रद्धा के प्रतीक-स्वामी श्रद्धानन्द

-ले० श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम लेते ही एक समर्पित और क्रियात्मक जीवन उभर कर सामने आता है। इस महामानव के जीवन की कहानी बड़ी विचित्र, विस्मयकारक और प्रेरणादायक है। किस प्रकार दोषपूर्ण जीवन में आकण्ठ डूबा हुआ एक धनी परिवार में उत्पन्न सर्वथा निर्व्यसनी बन कर देश का सर्वमान्य नेता बना। यह सचमुच अपने आप में अद्भुत और अनोखी बात है। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धाजंलि भेंट करते हुए कहा था कि-श्रद्धानन्द जी की भारत को देन उनकी सत्य में अगाध श्रद्धा है। श्रद्धानन्द यह नाम ही उनकी उस भावना का परिचायक है। वे नित्य प्रति श्रद्धावान थे और उसी में आनन्द मनाते थे। उनके लिए सत्य और जीवन एक हो गए थे। सत्य ही जीवन था और जीवन ही सत्य था। उनकी मृत्यु उनके निर्भीक अनथक प्रयत्नों के अमर चित्रों को आलोकित करती हुई एक प्रकाश किरण की तरह हमारे सामने आती है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन इस बात का साक्षी है कि यदि व्यक्ति दृढ़ निश्चय करके किसी उद्देश्य के लिए जुट जाता है तो वह अवश्य ही सफल होता है।

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान के बाद उन के द्वारा स्थापित आर्य समाज में बलिदान की भावना उजागर हुई और बलिदान की परम्परा भी इस के साथ ही आरम्भ हो गई। क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने व्याख्यानों में उपदेशों और ग्रन्थों में देश जाति व समाज के कल्याणार्थ आत्मोत्सर्ग की भावना जन-जन में पैदा कर दी थी। महर्षि के पश्चात यह परम्परा आज तक चली आ रही हैं। महर्षि के पश्चात अनेकों नौजवानों और आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने देश की आजादी के लिए अपने बलिदान दिए। इसी श्रृंखला में पं. लेखराम और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना बलिदान दिया। महर्षि दयानन्द जी ने जिन आदर्शों तथा देश जाति व समाज सुधार के कार्यों को आरम्भ किया था, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उन्हें मूर्त्त रूप प्रदान करने के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी जब मुन्शीराम के रूप में जब एक नौजवान थे तो उन्होंने महर्षि के ओजस्वी व्यक्तित्व को देखा था, उनके बहुत समीप से दर्शन किए थे और उनसे वार्तालाप भी किया था। आत्मा, परमात्मा, प्रकृति और धर्म आदि गूढ़ विषयों पर उनके तर्कपूर्ण प्रवचन सुने थे। मुन्शीराम जी के जीवन में महर्षि के उपदेशों का इतना अमिट प्रभाव था कि आगे चलकर वही मुन्शीराम एक विश्व विख्यात सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी के संदेश को घर-घर तक पहुंचाने व वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करने का संकल्प लिया था और अपने जीवन व व्यक्तित्व को तपस्वी, कर्मठ बना कर वैदिक धर्म की सेवा में समर्पित कर दिया था। उन्होंने धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक व शैक्षणिक समस्त क्षेत्रों में जागृति पैदा कर दी थी। महात्मा मुंशीराम सन्यासी बन कर स्वामी श्रद्धानन्द बन गए तो उन्होंने जिस गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना महर्षि दयानन्द के आदर्शों को पूरा करने के लिए की थी उसे भी छोड़ दिया क्योंकि उनका लक्ष्य महान था और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उनके अन्दर अगाध श्रद्धा थी। इसीलिए उन्होंने गुरूकुल से बाहर रहकर देश जाति व समाज के लिए कार्य करने शुरू कर दिए थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की छोटी बड़ी घटनाएं इस तथ्य को सिद्ध करती हैं के वे अग्रणी थे। अग्रणी वह मनुष्य बन सकता है, जिसके गुण, कर्म और स्वभाव में अग्नि तत्व की प्रधानता हो। क्योंकि अग्नि स्वयं अग्रणी होता है। महर्षि यास्क ने निरूक्त ग्रन्थ के दैवत काण्ड में अग्नि शब्द का निर्वचन दिया है।

अग्निः कस्माद्? अग्रणी-र्भवति।।

अर्थात् सर्वत्र अग्रणी होने के कारण अग्नि शब्द के ईश्वर, जीव और आग, विद्युत तथा सूर्य आदि अनेक अर्थ होते हैं। इन सब में अग्नि का धर्म विद्यमान होंता है। इसीलिए ये अग्रणी पद के अधिकारी होते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने सन्यास आश्रम का नाम श्रद्धानन्द को चुनने में यही ध्यान रखा था। ऋग्वेद में मन्त्र आता है-

अग्निनाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः। श्रद्धां भगस्य वचसा वेदयामसि।।

यह मंत्र श्रद्धा तत्त्व का निरूपण करता है। इसका स्थूल भाव यह है कि सत्य धारण पूर्वक यथार्थ विधि से अग्नि को भली प्रकार प्रचण्ड किया जाता है। परमेश्वर रूप अग्नि की उपासना भी श्रद्धा से ही सम्पन्न होती है। मानव जीवन की कर्त्तव्य रूप अग्नि का उद्बोधन भी ठीक श्रद्धा से ही होता है। भौतिक यज्ञ कुण्ड में भी घृतादि उत्तम पदार्थों की हवि श्रद्धा पूर्वक दी जाती है। श्रद्धापूर्वक वेद स्वाध्याय से बुद्धि की उपलब्धि होती है जिससे सर्वोत्तम कर्म किए जा सकते हैं। स्वामी जी ने इस वेद वचन के अनुसार अपने जीवन को सत्य के लिए अर्पित कर दिया था। उनके जीवन चरित्र के पढ़ने से पग-पग पर इस तथ्य का ग्रहण स्पष्ट रूप से मिलता है। महर्षि दयानन्द के साक्षात् से उन्हें अन्तर्ज्योति की प्राप्ति का उपदेश मिला। ऋषि के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का श्रद्धापूर्वक अध्ययन किया और तदनुसार आचरण करने में प्रवृत हुए।

महात्मा मुन्शीराम जी श्रद्धा की साक्षात् मूर्ति थे तभी तो महर्षि के विचारों को स्वीकार करने के पश्चात उनको अपने जीवन में पूर्ण रूप से हर पग पर तथा प्रत्येक क्षेत्र में निभाया। कहां वकालत का व्यवसाय और कहां स्वाध्याय के बल पर अपने शास्त्रों का गहरा ज्ञान उन के धर्मोपदेश जहां जीवन में साकार रूप थे, वहां स्वयं प्राप्त शास्त्र योग्यता को भी स्पष्ट करते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उर्दू, हिन्दी तथा अंग्रेजी में अनेक पुस्तकें लिखीं। हर अवसर पर सत्य को अपनाकर श्रद्धा को साकार किया और अपने सन्यास आश्रम के श्रद्धानन्द नाम को सर्वथा चरितार्थ किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज धुन के धनी, दृढ प्रतिज्ञा सत्यनिष्ठ, आर्य जाति के सपूत, वैदिक सिद्धान्तों से ओत-प्रोत तथा गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरूद्धारक थे। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज अद्भुत व चमत्कारिक व्यक्तित्व के धनी थे। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में इतनी वीरता और लोकप्रियता दिखाई थी कि ब्रिटिश शासन कांप उठा था। कैसे एक शराबी, मांसाहारी व्यक्ति न केवल इन बुराईयों पर विजय प्राप्त कर सका बल्कि इन बुराईयों के विरूद्ध लोहा लेने के लिए महात्मा और तदनन्तर उच्च कोटि के सन्यासी के रूप में प्रकट हुए।

आर्य समाज प्रतिवर्ष 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के रूप में मनाता चला आ रहा है। इस दिवस को मनाने का हमारा एकमात्र उद्देश्य उनके छोड़े हुए कार्यों हिन्दू समाज की रक्षा, वैदिक धर्म की स्थापना, वैदिक युग का निर्माण, भारतीय राष्ट्र की एकता और अखण्डता की रक्षा करना है। आज जबकि इस समय धार्मिक विचारों का ह्रास हो रहा है। धर्म का उत्थान नहीं पतन हो रहा है। आज नैतिक मूल्यों की नीलामी हो रही है। मानवता का पतन हो रहा है। ऐसे घोर समय में हम महापुरुषों के जीवन का प्रकाश लेकर समाज की इन विकृतियों को दूर कर सकते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस हमें अपने धर्म की रक्षा करने की प्रेरणा देता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का जीवन देश, धर्म और समाज तीनों के लिए समर्पित था। आज हम भी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाते हुए यह संकल्प लें कि हम उनके द्वारा स्थापित आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएंगे। अपने देश और धर्म की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहेंगे तभी हम उन्हें अपनी सच्ची श्रद्धाजंलि भेंट कर सकते है।

सम्पादकीय.....

शूरता की शान-स्वामी श्रद्धानन्द

हिम्मत है तो चला दो गोलियां, सन्यासी का सीना खुला है। यह सिंह गर्जना उस वीर सन्यासी की थी जो आज भी प्रत्येक भारतीय के शरीर में बिजली सी प्रवाहित कर देती है। ये शब्द स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 30 मार्च 1919 को चांदनी चौक में एक विशाल जुलूस का नेतृत्व करते हुए उस समय कहे थे जब गोरखा सिपाहियों ने आगे बढ़ते हुए जनसमूह को देखकर हवाई फायर किए थे।

प्रत्येक राष्ट्र में कभी कभी ऐसे महापुरूष जन्म लेते हैं जो अपने तप त्याग एवं बलिदान से इतिहास का निर्माण किया करते हैं और लोग जिनके पदचिन्हों पर चलकर अपना जीवन सार्थक करते हैं। ऐसे दिव्य पुरूष ही वे पारसमणि हैं जिनके स्पर्शमात्र से लोहे के समान साधारण मनुष्य भी प्रदीप्त स्वर्ण की भान्ति जगमगा उठते हैं। युग प्रवर्तक, वेदोद्धारक महर्षि. दयानन्द ऐसे ही पारसमणि थे, जिनका थोड़ा सा स्पर्श पाकर पापपंक में डूबे हुए अनेक जीवन सुमन कमल बनकर भारतोद्यान में महक उठे , जिनकी सुगन्ध से आज भी हमारा यह समाज सुरभित है। मदिरा की प्याली में डूबा रहने वाला, नास्तिक, जुएबाज मुन्शीराम महर्षि के उपदेशामृत से ऐसा सुवर्णमय मसीहा बन गया था, जिसकी आभा से सारा संसार आलोकित हो उठा और उसकी सुगन्ध से सभी दिशाएं सुवासित हो उठी थी। स्वयं को देव दयानन्द का अनुयायी बनाकर उस मनीषी ने सम्पूर्ण जीवन अविद्या अन्धकार को दूर करने में और मानवता को ज्योतिर्मय पथ पर चलाने में समर्पित कर दिया।

वेद का स्वाध्याय करते हुए महात्मा मुन्शीराम ने पढा था- उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां, धिया विप्रोऽजायत। बस इस एक मन्त्र ने तपस्वी के हृदय में गुरूकुल की स्थापना के दृढ़ संकल्प को जन्म दिया। अगस्त 1898 के सद्धर्म प्रचारक में यह भीष्म प्रतिज्ञा प्रकाशित हो कर जनता के सम्मुख आ गई कि जब तक गुरूकुल के लिए तीस सहस्र रूपये इकट्ठे नहीं कर लूंगा, तब तक घर में पैर नहीं रखूंगा। घर का सब काम काज त्याग कर, फलती फूलती वकालत को लात मार कर संसार की मोह माया को छोड़कर गुरूकुल का दीवाना मुंशीराम भिक्षा की झोली को हाथ में लेकर निकल पडा और तब घर में पैर रखा जब चालीस हजार रूपये एकत्रित हो गए। उस समय चालीस हजार रूपये एकत्रित करना कोई साधारण बात नहीं थी। समाज ने श्रद्धासिक्त हृदय से उन्हें महात्मा की उपाधि से विभूषित कर दिया और पर्वतराज हिमालय की उपत्यकाएं कल-कल निनाद करती हुई गंगा के पवित्र तट पर प्रकृति की सुरम्य गोद में निर्जन वन कांगड़ी गांव में गुरूकुल की स्थापना का स्वपन साकार हो गया। धीरे-धीरे इस गुरूकुल रूपी वृक्ष ने वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया, जिसकी शाखाएं चारों ओर फैलने लगी। गुरूकुल की यशोसुरभि ने सब को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। इंग्लैंड की पार्लियामैंट में भी इस की चर्चा होने लगी। उस समय की बड़ी-बड़ी हस्तियां गुरूकुल को देखने आती और और यहां के ब्रह्मचारियों और उनके महान् आचार्य को देखकर नतमस्तक हो जाती थी। मोहन दास कर्मचन्द गांधी को महात्मा की उपाधि से विभूषित करने वाली यह गुरूकुल की पुण्यभूमि ही थी। उस समय के गुरूकुल के विश्वव्यापी प्रभाव का मूल्यांकन अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री और प्रसिद्ध वकील मायरन एच. फैल्पस के इन शब्दों से किया जा सकता है। वे कहा करते थे कि यदि मेरा कोई लड़का होता तो मैं उसे गुरूकुल में भर्ती करता अथवा मैं ही आठ वर्ष की आयु प्राप्त कर सकता तो गुरूकुल में भर्ती हो जाता।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना तन, मन और धन सब कुछ मानवता की सेवा में अर्पित कर दिया। चाहे राष्ट्र भाषा हिन्दी के उत्थान का प्रश्न हो, अथवा देश की स्वतन्त्रता का या अपने उन लाखों भाईयों को गले लगाने का जो किन्हीं कारणों से विधर्मी बन गए थे। वे हर मोर्चे पर सबसे आगे रहे। स्वामी जी ने शुद्धि का ऐसा प्रखर आन्दोलन चलाया कि स्वार्थी लोगों के हृदय कांप उठे। वे उनके प्राणों के दुश्मन बन बैठे। धर्मान्ध मुसलमानों ने उन के विरोध में एक तूफान सा खड़ा कर दिया था। स्वामी जी को उनके शुभचिन्तकों ने कहा कि शुद्धि के कारण सब आपसे दूर होते जा रहे हैं और कुछ तो आपके प्राणों के ग्राहक बन गए हैं। इस पर स्वामी जी ने कहा कि जब तक मेरा प्रभु मेरे साथ है, प्रभु का पवित्र वेद ज्ञान मेरे साथ है सत्य मेरे साथ है तब तक चाहे सारा संसार मेरा विरोधी हो जाए तो मुझे कोई चिन्ता नहीं, मैं सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार करने से पीछे नहीं हटूंगा। महर्षि दयानन्द को वे अपना गुरू मानते थे। ऋषि चरणों में अपनी अगाध श्रद्धा को अभिव्यक्त करते हुए 1925 ई. में मथुरा जन्मशताब्दी के अवसर पर जो भावपूर्ण श्रद्धांजलि स्वामी जी ने अर्पित की थी, उसका एक-एक शब्द हृदय को छूने वाला है-

ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो गए हैं परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पटल पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र से मेरी रक्षा की है? तुमने कितनी गिरती हुई आत्माओं की काया पलट दी है? इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? बिना परमात्मा के जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है परन्तु अपने विषय में कह सकता हूं कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरती हुई अवस्था से उठा कर सच्चा जीवन लाभ करने योग्य बनाया है? मैं क्या था, क्या बन गया और अब क्या हूं, वह सब तुम्हारी कृपा का परिणाम है। भगवन! मैं तुम्हारा ऋणी हूं, उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूं। इसलिए जिस परमात्मा की असीम गोद में तुम परमानन्द अनुभव कर रहे हो, उसी से प्रार्थना करता हूं कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करे।

स्वामी जी के हृदय में दिन रात देश प्रेम की, विश्व बन्धुत्व की एवं मानव कल्याण की ज्वाला जलती रहती थी। उनका जीवन खुली किताब है, जिसका हर पृष्ठ पढा जा सकता है। विश्व के इतिहास में वे एक ऐसे अद्भुत महामानव थे जिन्होंने अपनी आत्मकथा में जीवन के बीभत्स एवं गर्हित पक्ष को भी बिना किसी हिचकिचाहट के लिख डाला। एक आर्य नेता होते हुए भी दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद में हजारों उपस्थित मुसलमानों को सम्बोधित करने का गौरव भी उन्हें प्राप्त हुआ था। स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन उत्थान और पतन की प्रेरक कहानी है। उनका जीवन कोटि-कोटि नर नारियों के लिए एक प्रकाश स्तम्भ है जो ऊपर उठने का साहस नहीं कर पाते। उनका जीवन एक अनुपम उदाहरण है इस सत्य का कि एक तिनका धरती से उठ कर आकाश में चन्द्रमा की भांति जगमगा सकता है।

आईये! 23 दिसम्बर को हम सभी अपनी-अपनी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं में उस महान बलिदानी, शूरता की शान अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर उस महान आत्मा को शत-शत नमन करते हुए, उनके विचारों को अपने जीवन में धारण करते हुए उस महामानव के बताए मार्ग पर चलने का संकल्प ल यही हमारी उस महामानव के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्रा

www.thearyasamaj.org

हमें जीते जी नहीं मरना है–मृत्यु का स्वरूप

-ले० श्री पं उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक उत्तराखण्ड, देहरादून

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योंमा अमृतं गमय।

भावार्थ-हे ईश्वर मुझे असत से सत्य की ओर, अन्धेरे से उजाले की ओर और मृत्यु से अमरता (मोक्ष) की तरफ जाने की प्रेरणा दीजिए।

श्रद्धेय पाठक, संसार में सम्पूर्ण प्राणी मृत्यु के भय से ग्रसित है और प्रत्येक क्षण मृत्यु से बचने का प्रयत्न करते रहते हैं। यह सभी जानते व मानते हैं कि एक दिन मेरी मृत्यु होगी, किन्तु उस सत्य को स्वीकार करने में उपेक्षा करते हैं।

गीता में श्री कृष्ण ने कहा है-**कालोस्मि लोकक्षयकृत प्रबद्धः लोकान समाहर्तुमिह प्रवतः** (गीता 11.32) में काल बनकर संसार का संहार करने आया हूँ। मनुष्य के चारों तरफ से काल उसे ग्रसित करने के लिए मुंह फाड़े उसकी तरफ भागा चला आ रहा है। किसी ने सत्य ही कहा है कि आश्चर्य इस बात का नहीं मनुष्य जिन्दा है। आश्चर्य तो इस बात का है कि पग-पग पर मनुष्य मौत के शिकंजे में पड़ा होने पर भी जी कैसे रहा है। उसका आभास नहीं करता है।

आइए मृत्यु क्या है, इस पर विचार करते हैं-

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यम मन्दिरम्।
शेषाः स्थावरमिच्छन्ति किमाश्चर्यन्तः परम॥

प्रतिदिन सैकड़ों प्राणी मौत के घाट उतर रहे हैं। किन्तु शेष अस्थाई रहना चाहते हैं। इससे अधिक आश्चर्य क्या है। अपने हाथों से अपने बन्धुओं को हम श्मशान में जला देते हैं। किन्तु यह नहीं सोचते कि हमारी भी एक दिन मृत्यु होनी है। जब मनुष्य श्मशान में किसी अर्थी के साथ जाते हैं तो कहते हैं कि ओम नाम सत्य है या राम नाम सत्य है। यह नारा लगाते चलते हैं। किन्तु जब मुर्दे को जलाकर वापस आते हैं तो वह ओ३म् नाम भूल जाते हैं और अपने-अपने भौतिक कामों में लग जाते हैं, आश्चर्य है।

मृत्यु के स्वरूप को समझने के लिए हमें जानना होगा कि मृत्यु शरीर की होती है आत्मा की नहीं होती। क्योंकि आत्मा की शरीर से भिन्न सत्ता है। जन्म शरीर का होता है और मृत्यु भी शरीर की होती है। आत्मा कोई स्वरूप नहीं बनता है। बचपन, जवानी, बुढ़ापा शरीर का होता है, आत्मा का नहीं होता। शरीर की मृत्यु जन्म लेते ही शुरू हो जाती है। हमारे शरीर की कोशिकायें मरती रहती हैं और उसकी जगह नई बनती रहती है। जन्म के पीछे एक सत्ता बनी रहती है। जो इन कोशिकाओं को एक सूत्र में बांधे रखती हैं। रोग, शोक, दुःख, सुख, जरा, व्यथा शरीर की होती है। आत्मा की नहीं होती।

शरीर की मृत्यु प्रतिक्षण होती रहती है। क्योंकि हमारा शरीर कोशिकाओं से बना हुआ है। यह प्रतिक्षण टूटती रहती है और नई बनती रहती है। परन्तु मृत्यु के अन्तिम क्षण में नई कोशिकाएं बनना सर्वथा बन्द हो जाती है और पुरानी सब टूट जाती हैं, इसी को हम मृत्यु कहते हैं। शरीर के नष्ट होने पर चेतन शक्ति भी नष्ट हो जाती है। शरीर टूट जाए तो आत्मा दूसरे शरीर का निर्माण कर लेता है। इसलिए शरीर का रूपान्तरण होता है और आत्मा के रूपान्तरण को पुनर्जन्म कहते हैं।

हमारे सारे उपक्रम मृत्यु से बचने के लिए होते हैं-संसार के सभी प्राणी चाहे वह पशु पक्षी हो या मनुष्य को मृत्यु से डरकर बचने का प्रयत्न करते हैं। मनुष्य किस लिए खाता है, इसीलिए कि कहीं मर न जाऊँ। पढ़ना-लिखना, व्यवसाय करना या नौकरी करना, इसलिए कि धन कमाकर इस शरीर को मृत्यु से बचाऊँ। परिवार बनाना, समाज की रक्षा हेतु पुलिस की व्यवस्था करना, राष्ट्र रक्षा के लिए सेना की व्यवस्था करना, किसलिए कहीं हमारी मृत्यु न हो जाए। हम प्रत्येक क्षण अपनी सुरक्षा चाहते हैं। क्योंकि कहीं हम मर न जायें। चारों ओर मौत मंडरा रही है।

मृत्यु आत्मा की नहीं होती-मृत्यु केवल शरीर की होती है, आत्मा तो अजर-अमर है। केवल शरीर से दूसरे शरीर भेजकर रूपान्तरण करता है। शरीर की तीन अवस्थाएं होती हैं, स्थूल शरीर, कारण शरीर, सूक्ष्म शरीर। मृत्यु होने पर स्थूल शरीर नष्ट हो जाता है। कारण शरीर पंच तत्वों में चला जाता है और सूक्ष्म शरीर संस्कारों को लेकर दूसरे शरीर में चला जाता है। यह कर्मभोग चक्र चलता रहता है।

मृत्यु उपरान्त जीव की गति-जब पुरूष मर जाता है तो इसकी वाणी अग्नि में प्राण वायु में, चक्षु आदित्य में, मन चन्द्रमा में, श्रोत्र दिशाओं में, शरीर पृथ्वी में शरीरवर्ती आकाश ब्रह्माण्ड में, लोभ औषधि में, केश वनस्पति में शोणित और रेत जल में लीन हो जाते हैं। कार्य अपने कारण में और पिण्ड ब्रह्माण्ड में चल देता है। जीव का आधार केवल कर्म ही बचते हैं और वह कर्मानुसार जन्म पाता है।

मृत्यु के समय स्थिति-मृत्यु के समय आत्मा सभी इन्द्रियों को अन्दर खींच लेती हैं। सभी इन्द्रियाँ अपना कार्य करना बन्द कर देती हैं। उस समय हृदय को अग्र प्रवेश में हितानाम की नाड़ियाँ हृदय से ऊपर हो जाती हैं और हृदय का अग्रभाग व आत्मा की ज्योति से प्रकाशित हो जाता है और इसी ज्योति के साथ आत्मा चक्षु से मूर्धा से या शरीर के किसी भी अन्य प्रदेश से निष्क्रमण कर देता है और उसके निकलने के पश्चात् इन्द्रियां भी पीछे-पीछे निकलने लगती हैं। जीव मरते समय संविज्ञान हो जाता है। जीवन के सारे कर्म खेल उसके सामने आ जाते हैं और विद्या पूर्व प्रज्ञा भी साथ ले जाते हैं और जैसे तृण जलाशुण्डी तिनके के अन्त पर पहुँच कर दूसरे तिनके के सहारे को पकड़कर अपनी ओर खींच लेता है। इसी प्रकार आत्मा भी इस शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में प्रविष्ट हो जाती है।

जैसे शरीर का रूपान्तरण होता है। वैसे आत्मा का भी रूपान्तरण होता है। शरीर के रूपान्तरण को मृत्यु कहते हैं और आत्मा के रूपान्तरण को पुनर्जन्म कहा जाता है। जीवन और मृत्यु भिन्न-भिन्न दृष्टियों में एक ही वस्तु के दो नाम हैं।

इस लेख से आर्य जगत को सन्देश-श्रद्धेय आर्य भाई बहनों, हम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुयायी हैं और उस देवता ने, वेदों के प्रचार, समाज सुधार के लिए अपना मोक्ष नहीं चाहा अपितु सारे संसार के कल्याण को चाहा और इस मृत्यु को हंसते-हंसते गले लगाया। किन्तु हम भूल गये हैं कि हमारी भी मृत्यु होनी है और हम अपने व्यवहारों के कारण आर्य समाज को कहाँ ले जा रहे हैं। जिन बलिदानियों ने आर्य समाज के विकास के लिए मृत्यु को वरण किया। क्या उनका ऋण हमारे ऊपर नहीं है। आज आर्य समाज नेतृत्व विहीन हो रखा है और जगह-जगह पदवाद, हटवाद, सम्पतिवाद, जगह-जगह सिद्धांतों की अवहेलना से आर्य समाज का ग्राफ गिरता जा रहा है। हम आर्य समाज को बीमार कर रहे हैं। कहीं आर्य समाज को कैंसर न हो जाए। जो लाइलाज हो जाए और हमारे सिर पर चारों तरफ से चुनौतियों खड़ी हैं। हमें संगठित होकर उनका सामना करना है।

हम जीते जी नहीं मर सकते। एक दिन यह शरीर और दुनिया हमें छोड़नी ही है तो काहे का आपसी झगड़ा। व्यर्थ का अहंकार करें। एक आने वाली पीढ़ी के लिए एक सत्य मार्ग का इतिहास बना कर इस संसार से विदा होवें।

हम ऋषि ऋण से उऋण होवें। याद रखें एक दिन मुझे अवश्य मरना है। हम एक-एक क्षण मौत की ओर जा रहे हैं।

पुनर्जन्म: सिद्धि व लाभ

-ले० श्री इन्द्रजित् देव, यमुनानगर (हरियाणा)

(गतांक से आगे)

मनुष्य योनि ही कर्म योनि है तथा उस योनि में कर्म करने की पूर्ण स्वतन्त्रता होने के कारण उस योनि में रहने वाले जीव को कुछ भी कर्म का अधिकार है, छूट है। यदि तब वह पाप/दुष्कर्म करता है तो दण्ड देने तथा सुधार करने के उद्देश्य से उसे फलस्वरूप परमात्मा पशु-पक्षियों की किसी योनि में भेजता है। वहां वह नये पाप/दुष्कर्म करने के अधिकार और अवसरों से वंचित हो जाता है। पाप करने के साधन, अवसर व अधिकार केवल मनुष्य शरीर में ही उपलब्ध हैं। मनुष्य शरीर ही पाप कर्म करने का साधन है, अन्य कोई शरीर नहीं। जिस प्रकार एक हत्यारा निर्दोष की अपनी बन्दूक से हत्या करता है तो न्यायाधीश बन्दूक को दण्ड न देकर उसे ही देता है, उसी प्रकार मनुष्य शरीर से पाप करने वाले जीव को ही दण्ड स्वरूप घोड़े, गधे या सुअर की योनि में ईश्वर भेजता है। स्पष्ट है कि दण्ड तो जीव को ही मिलता है, शरीर को नहीं। शरीर साधन मात्र है। आत्मा व शरीर का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। जीव शरीर के बिना निष्क्रिय है तथा शरीर जीव के बिना व्यर्थ है। मनुष्य शरीर में रहे जीव पुण्य कर्मों का फल भोगने की इच्छा रखकर पुण्य कर्म करेगा तो पशु योनि में भेजकर उससे पाप करने का अभ्यास छुड़ाया जाता है तथा कालान्तर में उसे ही पुन: मनुष्य योनि में लाया जाता है। यह परमात्मा की जीव के सुधार, पाप मुक्ति व कल्याण की दिव्य तथा अनुपम व्यवस्था है न कि यह अन्याय है।

विपक्षियों की ओर से एक आक्षेप यह किया जाता है कि जीवों द्वारा मनुष्य योनि में रहकर किए दुष्कर्मों पापों का फल देने व जीवों के सुधार हेतु उन्हें पशु-पक्षी व कीट पतङ्गादि योनियों में ईश्वर द्वारा भेजना लाभदायक नहीं है क्योंकि उन्हें यह सूचना जानकारी ही नहीं मिलती कि उन्होंने कौन-से दुष्कर्म किये थे, जिनके फलस्वरूप उन्हें निम्न योनि में जन्म मिला है। जब दुष्कर्मों का ज्ञान ही जीव को न होगा तो वह सुधार परिष्कार व उनसे बचाव करेगा ? इस प्रश्न का उत्तर महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के नवम समुल्लास में इस प्रकार दिया है-

(उत्तर) तुम ज्ञान कै प्रकार का मानते हो ?

(प्रश्न) प्रत्यक्षादि प्रमाणों से आठ प्रकार का।

(उत्तर) तो जब तुम जन्म से लेकर समय-समय में राज, धन, बुद्धि, विद्या, दारिद्रय, निर्बुद्धि, मूर्खता आदि सुख-दु:ख संसार में देखकर पूर्वजन्म का ज्ञान क्यों नहीं करते ? जैसे एक अवैद्य और वैद्य को कोई रोग हो, उसका निदान अर्थात् कारण वैद्य जान लेता है और अविद्वान् नहीं जान सकता। उसने वैद्यक विद्या पढ़ी है और दूसरे ने नहीं। परन्तु ज्वरादि रोग होने से अवैद्य भी इतना जान सकता है कि दु:ख आदि की घटती-बढ़ती देख के पूर्वजन्म का अनुमान क्यों नहीं जान लेते ? और जो पूर्वजन्म को न मानोगे तो परमेश्वर पक्षपाती हो जाता है क्योंकि बिना पाप के दारिद्रयादि दु:ख और बिना पूर्व सञ्चित पुण्य के राज्य धनाढ्यता और निर्बुद्धिता उसको क्यों दी ? और पूर्वजन्म के पाप-पुण्य के अनुसार दु:ख-सुख के देने से परमेश्वर न्यायकारी यथावत रहता है।

इन पंक्तियों के लेखक के मतानुसार यह आवश्यक नहीं है कि पापों/दुष्कर्मों का फल देखकर-भोगकर सब जीव सुधर सकते हैं। कितने ही चोरों को हम बन्दी गृह में जाते हुए देखते हैं। किसी अन्य अपराध में बहुत से अपराधियों को दूसरे प्रकार के दण्ड भुगतते हुए देखते हैं परन्तु कुछ ही अपराधी अपराधों को त्यागते हैं। अपराधी पूर्ववत् अपराध करते ही हैं। कम ही लोग दण्ड को देखकर अपराध/पाप नहीं करते परन्तु यह नियम अनिवार्यत: सब पर लागू नहीं होता। सुधार केवल अपराध/पाप का फल देखकर-जानकर ही संभव नहीं है। यह विषय संस्कार-भिन्नता पर भी आधारित है। संस्कार वश भी मनुष्य पाप करते हैं।

पुनर्जन्म सम्बन्धी कुछ प्रश्नों के उत्तर देने के पश्चात् पुनर्जन्म का सिद्धि का थोड़ा-सा प्रयास आगे किया जा रहा है।

नवजात शिशु कभी हंसता है तो कभी रोता देखा जाता है। कभी भूख लगने पर मां का दूध पीने के लिए वह रोता भी है। शिशु की ये क्रियाएं उसके विगत् जन्म की स्मृति व अनुभव का प्रमाण देती है। पूर्व जन्म में भूख लगने पर जब वह रोता था, तब उसकी माता भोजन दे देती थी, दूध पिला देती थी। इसी प्रकार सुख दे चुके दृश्यों, व्यक्तियों व पदार्थों की स्मृति आने पर वह प्रसन्न होता है तो दु:ख देने वाले पदार्थों, दृश्यों व व्यक्तियों की स्मृति आने पर भयभीत होने लगता है। जन्म लेते ही बालक को मां के स्तन से दूध पीने का अभ्यास का प्रशिक्षण नहीं होता किन्तु जन्मते ही बिना किसी के सिखाये ही शिशु अपनी माता का दूध पीने लगता है। इससे सिद्ध होता है कि विगत जीवन में वह दूध पीता रहा है तथा उसे अब भी स्मरण आ रहा है। इसी अभ्यास से वह बिना प्रशिक्षण दूध पीता है। हमारा प्रश्न आक्षेपकर्त्ताओं से यह है कि गाय का नवजात बछड़ा जन्म लेने के कुछ समय बाद ही नदी में तैरता देखा गया है। वे बताएं कि आपने यह प्रशिक्षण किससे लिया तथा इसका अभ्यास किए बिना वह कैसे तैरता है ? उत्तर है-यह पिछले किसी जन्म का अनुभव है। इतना ही नहीं, मृत्यु के समय होने वाले कष्ट का अनुभव जीवन में एक बार व्यक्ति मरते समय ही करता है। मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी भी मृत्यु से भयभीत रहते हैं। इससे भी स्पष्ट है कि पिछले जन्म की मृत्यु के समय होने वाले कष्ट की अनुभूति ही उसे मृत्यु से भयभीत करती है। मृत्यु से भयभीत होना भी आत्मा की नित्यता और पुनर्जन्म को प्रमाणित करती है-

पूर्वाभ्यास्तस्मृत्यनुबन्धाज्जातस्य हर्ष भयशोकसम्प्रति पते:।

न्याय दर्शन, 3-1-16

व्यक्तियों के संस्कारों, गुणों, रूचियों, योग्यताओं, कार्यों तथा व्यवहारों में भिन्नता, भी पुनर्जन्म को सिद्ध करती है। यदि हमारा वर्तमान जीवन ही प्रथम व अन्तिम है तो सबकी ये वस्तुएं एक जैसी होनी चाहिए परन्तु दो जुड़वा भाईयों के विचारों, संस्कारों व रूचियों आदि में भी समानता पाई जाती है। तमिलनाडू के रामानुजम को गणित में ही योग्यता क्यों थी ? शेष सभी विषयों में वह अनुत्तीर्ण क्यों हो गया था ? मास्टर मदन को किसी ने संगीत का प्रशिक्षण नहीं दिया था। फिर भी बिना सीखे पारंगत क्यों व कैसे बन गया ? आप या मैं क्यों गायक नहीं हो पाए ? चूहों का मूर्तियों पर चढ़ने-उतरने का सबको बोध क्यों नहीं हुआ ? एक ही माता-पिता की एक पुत्री को क्रोध आता है तो दूसरे का मन आध्यात्मिकता की ओर क्यों मुड़ गया है ? एक दानी है तो दूसरी कन्जूस क्यों बनी ? योगदर्शन के सूत्र 3/18 के अनुसार किसी व्यक्ति के संस्कारों का साक्षात्कार करने से पूर्वजन्म का ज्ञान होता है-

संस्कार साक्षात् करणात् पूर्व जाति ज्ञानम्।

अर्थात् अवचेतन संस्कारों के प्रत्यक्षीकरण होने से पूर्व जन्मों का ज्ञान होता है।

पूर्वजन्म को न मानने वाले लोग अपनी बोलचाल की भाषा में पूर्वजन्म को स्वयं मानते हैं, भले ही इससे इन्कार करते हैं-

''माता जी चल बसीं।'' इस वाक्य में चले जाना अर्थात् मरना माना गया परन्तु कहीं उसका अन्यत्र बस जाने की स्वीकृति भी है।

यह पुनर्जन्म की आवश्यकता व इसके लाभों पर विचार करना भी इस विषय में अपेक्षित है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द के ''सत्यार्थ प्रकाश'' के अष्टम समुल्लास के इस वाक्य का हम उदाहरण देना चाहते हैं-''ईश्वर के नियम सत्य और पूरे हैं।'' आप यह भी मानते होंगे कि सत्य बदला नहीं है, वह अपरिवर्तनशील है, अटल है तथा सत्यकारी ईश्वर की व्यवस्था कभी भी असत्य नहीं हो सकती। पुनर्जन्म का उसका कार्य इसलिए है क्योंकि छत पर पहुंचने हेतु सीढ़ियों की आवश्यकता होती है। सबसे नीचे खड़े व्यक्ति को ऊपर छत तक पहुंचने के लिए कई प्रयत्न करने पड़ते हैं। प्राय: व्यक्ति एक पग उठाकर एक ही सीढ़ी चढ़ते हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ 5 का शेष-पुनर्जन्म : सिद्धि.....

कोई व्यक्ति एक सीढ़ी भी कठिनाई से चढ़ता है तो कोई दूसरा चढ़ते-चढ़ते गिर जाता है तो कुछ लोग बहुत ऊंचा चढ़कर फिर नीचे आ गिरते हैं। ऐसे भी लोग आपको मिलेंगे जो दूसरी सीढ़ी पर भी पग रख नहीं पाते तथा प्रथम सीढ़ी पर ही खड़े रहते हैं। प्रथम सीढ़ी पर खड़े व्यक्ति धड़ाम से नीचे धरती पर गिरते भी देखे जाते हैं। जब तक छत पर न पहुंचा जाए, नीचे से ऊपर व ऊपर से नीचे का क्रम चलता रहता है। विश्वविद्यालय भी परीक्षार्थियों को उत्तीर्ण होने के लिए एक बार अवसर देता है। ईश्वर भी ऐसा ही करता है-मोक्षावस्था तक जब तक जीव न पहुंच पाएगा, तब तक वह उसे जन्म देता रहेगा। हमें बार-बार जन्म लेना पड़ेगा। यह ईश्वर की कृपापूर्वक व्यवस्था है। जीव का परम लक्ष्य-आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक दु:खों से छूटना ही है। इसके बिना जीव को किसी भी योनि में परम सुख (मोक्ष) प्राप्त न होगा। इसी की प्राप्ति करने हेतु ईश्वर ने बार-बार जन्म कर्मानुसार देने की अनिवार्य व्यवस्था की है।

इस व्यवस्ता का वर्णन वेदों में यत्र-तत्र किया है व कुछ आर्य ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख मिलता है। यहां हम कुछ मंत्र प्रमाण रूप में प्रस्तुत करते हैं-

1. पुनर्मन: पुनरार्युम आगन पुन: प्राण: पुनरात्मा म आगनपुनश्चक्षु: पुन: श्रोत्रं म आगन्। वैश्वानरो अदब्धस्तनूपा अग्निर्न: पातु दुरितादवद्यात्। यजु. ४/२५

2. पुनर्मैत्विन्द्रियं पुनरात्मा द्रविणं ब्राह्मण च।

पुनरग्नयो धिष्णया यथास्थाय कल्पयन्ता मिहैव।

-अथर्व ७-६-६७-२

3. आयो धर्माणि प्रथम: ससाद ततो वपूंषि कृणुषे पुरुणि।

धास्युर्योनि प्रथम आ विवेशा यो वाचमनुदिता चिकेत।

4. असुनीतो पुनरस्मासु चक्षु: पन: प्राणमिह धेहि भोगम्।

ज्योक पश्येम सूर्य्यमुच्चरन्त-मनुमते मृडया न: स्वस्ति:।

ऋ ८-१-२३-६

5. पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु प्रर्नद्यौर्देवी प्रमरन्तरिक्षम्।

प्रनर्न: सीमस्तन्वं ददातु पुन: पूषा पथ्यां इया स्वास्ति:॥

ऋ ८-१-२३-७

6. स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।

यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त॥ यजु. ३२-१०

7. असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृत्ता:।

तास्ते प्रेत्यापि गच्छान्ति ये के चात्म हनो जना:॥

-यजुर्वेद २२/३८

8. द्वेसृती अश्रृण्वं पितृ गामहं देवानामुतमर्त्यानाम्।

ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च॥

-यजुर्वेद १६-४८

चरक सहिंता के सूत्र स्थान के सन्दर्भ सहित निवेदन है कि वहां प्रत्येक मनुष्य की तीन स्वभाविक ऐषणाओं का वर्णन है। ये विशेषताएं हैं- प्राणैषण, वित्तैषणा व परलोक लोकैषणा। जो जीवन मुझे मिला है, वर्तमान है, वह जीवन सुख-शान्ति से व्यतीत हो जाए, इसमें मेरे प्राणों पर संकट न आए-यह इच्छा करना प्राणैषणा है। इस जीवन को सुख-शान्ति से व्यतीत करने के लिए मुझे भौतिक साधन अपेक्षित हैं। वे मुझे मिलते रहें, ऐसी इच्छा करना वित्तैषणा है। इस शरीर से छूटने के पश्चात् अगले जन्म में किसी अच्छे परिवार, अच्छे स्थान व अच्छे शरीर में मैं जाऊं यह कामना करना परलोकैषणा है, जो सबमें है। इस स्वाभाविक इच्छा के आधार पर पुनर्जन्म को न मानने वाले लोग कहते हैं कि यदि पुनर्जन्म होता भी है तो वह माता-पिता का ही अंश होता है। उससे पृथक् व स्वतन्त्र कुछ नहीं होता। हमारा निवेदन यह है कि यह मान लेने पर एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि नए शरीर में चेतना कहां से आती है ? यदि नए शरीर में माता-पिता का ही आत्मा आता है तो माता-पिता को मरना पड़ेगा। उनके मरे बिना उनकी आत्माएं पुत्र अथवा पुत्री में कैसे आएंगी ? माता-पिता दोनों ही आत्माएं न सही, उनमें से किसी एक को तो मरना ही पड़ेगा। क्या ऐसा होता है ? यदि माता-पिता की आत्माएं समग्र रूप में सन्तान में नहीं आती और आंशिक रूप में कुछ भाग में आएं, तो भी वे मरेंगे ही। ऐसा लोक में होता नहीं, न ही होगा। इससे भी सिद्ध है कि वर्तमान शरीर से निकला आत्मा ही किसी की (ईश्वर की) व्यवस्था से नया शरीर धारण करता है। यही पुनर्जन्म है।

पृष्ठ 1 का शेष-अमर शहीद.....

इसीलिए उन्होंने राष्ट्र के शरीर को क्षीण करने वाली इस मलिनता को धो ड़ालने का संकल्प किया था उनका शुद्धि आन्दोलन राष्ट्रीय शरीर की शुद्धि का अभियान था। परन्तु दुर्भाग्य है हमारा और हमारे देश का कि स्वामी जी एवं आर्य समाज के इस आन्दोलन का प्रवाह हिन्दुओं की संकीर्ण एवं राजनैतिक नेताओं की विवेकहीनता की बाधाओं ने अवरूद्ध कर दिया। काश! राष्ट्र मालिन्य के शोधन की यह विधि हमें हृदयंगम हो जाती तो देश को इस दुर्दशा का मुंह न देखना पड़ता। जब स्वामी जी आगरा में शुद्धि कर रहे थे तो मुसलमान नेताओं के आग्रह पर कांग्रेस के शीर्षस्थ नेताओं ने स्वामी जी से मांग की कि शुद्धि आन्दोलन से दोनों सम्प्रदायों में द्वेष फैलता है, अत: आप इसे बन्द कर दें। स्वामी जी का उत्तर था कि मैं अपने प्रचारक वापिस बुला सकता हूं यदि मुस्लिम नेता अपने प्रचारकों को वापिस बुला लें और यह वचन दें कि वे किसी हिन्दू को मुसलमान नहीं बनाएंगे। परन्तु किसी में साहस नहीं था कि मुस्लिम नेताओं से यह मांग मनवा सकें। यही नेता हमारे आन्दोलन का हिन्दू मुस्लिम सौहार्द के नाम पर सदा विरोध करते रहे। स्वामी जी अपने मार्ग से विचलित नहीं होने वाले थे। इसी राष्ट्रीय आन्दोलन की वेदी पर उनका गौरवपूर्ण बलिदान हुआ।

23 दिसम्बर आर्य समाज के लिए गौरवपूर्ण विभूति स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस है जो सारे आर्य जगत् में समारोहपूर्वक मनाया जाता है। आज स्वामी श्रद्धानन्द जी हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन वीरता एवं साहस, त्याग एवं बलिदान, देश एवं धर्म भक्ति का जो पथ उन्होंने प्रशस्त किया है वह अनन्त काल तक सारे संसार को प्रेरणा देता रहेगा। आज हम आत्मनिरीक्षण करें कि क्या हम वास्तविक रूप में उस अमर बलिदानी को श्रद्धाजंलि देने के अधिकारी हैं, जिसने वेद के मार्ग पर तथा स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने के लिए अपनी संपति ही नहीं अपने जीवन की भी आहुति दे दी। आईये हम भी उस महान् बलिदानी को उसके बलिदान दिवस के अवसर पर शत्-शत् नमन करते हुए आर्य समाज की उन्नति का संकल्प लें।

आत्म-विनय

विद्यासागर शास्त्री आदर्श नगर 533/11 कैथल

हे ईश! निर्मल मन कर दो!
हृदय म्लानता कर प्रक्षलित, उज्जवलता भर दो।
दूर हटा दो कलुष वृत्तियां शुद्ध हृदय मकं निगम सूक्तियां,
वाणी संस्कृत मधुर मन्त्र को, मानस में भर दो।
निगम-शास्त्र का करूं अनुशीलन मनन-श्रवण से ज्ञान उपार्जन।
शक्ति पुंज दे शामित चित्त को ज्योतिर्मय कर दो।
तोड़ गिराऊँ भव को बन्धन, आत्मज्योति से पाऊं स्पन्दन।
देव! मन्त्र छन्द का मधुर कण्ठ स्वर दो।

भारत के पतन का कारण

आदि हमारा देश यही है, आर्य हमारा नाम वही है।
धर्म हमारा वेद सही है, भारत वैसा आज नहीं है।
कारण क्या ? जो गर्त गिरे हैं, भारत के क्या कर्म फिर हैं ?
संस्कृति के जो विज्ञ नहीं है, शासन हाथों में उनके हैं।

उद्‌बोधन

कैसे मेरा देश ऊंचा उठेगा, ऐसे ही क्या नित्य नीचे गिरेगा।
जैसे भी हो देश ऊंचा उठाओ! चाहे प्यारे प्राण वीरों! चढ़ाओ।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज बैक फील्डगंज लुधियाना में एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की बड़ी बहन स्वर्गीय श्रीमती सरला शर्मा जी के गत दिनों नई दिल्ली में देहावसान पर गहरा दुख व्यक्त किया गया और उनकी आत्मिक शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई। इस प्रार्थना सभा में आर्य समाज के सदस्यों ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिये दो मिनट का मौन धारण किया तथा परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति एवं सदगति के लिये प्रार्थना की गई।

-हरीश सूद प्रधान

आर्य समाज बरनाला में वेद-प्रचार उत्सव सम्पन्न

सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्रद्धेय श्री जगत वर्मा के वैदिक-सुर संगम में एवं यज्ञ संचालक पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री के मार्ग-दर्शन में आर्य समाज बरनाला में दिनांक 19 नवम्बर 2013 से 21 नवम्बर 2013 तक वेद प्रचार उत्सव बड़े ही श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बरनाला की आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी वर्ग एवं स्टाफ वर्ग में वैदिक-संस्कृति नैतिक भावना जागृत करने के लिए दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, गाँधी आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज में विशेष रूप से वैदिक भजनोपदेश का कार्यक्रम आयोजित किए गए। विद्यार्थी गज, समूह स्टाफ के साथ-साथ सम्बन्धित प्रबन्धक समिति के सदस्य गण भी इससे लाभान्वित हुए। दिनांक : 19.11.2013 एवं 20.11.2013 को रात्रिकालीन 8:00 बजे से 9:30 बजे तक वैदिक-भजन संध्या से समूह नगर निवासियों को प्रेरित करने के लिए आर्य समाज हंडियाया बाजार बरनाला में एक विशाल एवं आकर्षक पण्डाल सजाया गया था। श्रद्धेय श्री जगत वर्मा जी के अद्भुत संगीतमय भजनो-पदेशों से उपस्थित विशाल जन समुदाय कृत-कृत्य हो गया। इसमें बरनाला के सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी, स्टाफ वर्ग आर्य समाज के सदस्य गण एवं नगर के गणमान्य सदस्य शामिल होकर धर्म-लाभ प्राप्त किए।

दिनांक 21 नवंबर 2013 को श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज में प्रात: 11 से अपराह्न 2:00 बजे तक समापन समारोह के रूप में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। बरनाला की समूह आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी, स्टाफ वर्ग एवं प्रबन्ध समिति के सदस्य गण तथा नगर के गणमान्य सदस्यों ने अपनी उपस्थिति देकर धर्म लाभ प्राप्त किया आर्य जगत् के महान विद्वान श्रद्धेय स्वामी सूर्य देव जी महाराज के प्रवचन एवं महान भजनोपदेशक आदरणीय श्री जगत वर्मा के वैदिर सुर-संगम में उपस्थित जन-जमुदाय कृत कृत्य हो गया। कार्यक्रम के अन्त में प्रधान डॉ० सूर्य कान्त शोरी ने अपने वक्तव्य में सभी का धन्यवाद किया शान्तिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-मंत्री आर्य समाज, बरनाला

मकर संक्रान्ति पर्व

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में दिनांक 14 जनवरी 2014 को बाद दोपहर अढ़ाई बजे से साढ़े पांच बजे तक मकर संक्रान्ति पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान मकर संक्रान्ति पर्व पर अपने विचार रखेंगे। धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वह समय पर पधार कर धर्म लाभ उठावें।

-मंत्राणी स्त्री आर्य समाज

समलैंगिकता सभ्य समाज के लिए कलंक

-ले० श्री स्वतन्त्र कुमार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

सुप्रीम कोर्ट द्वारा समलैंगिकता को धारा 377 के अर्न्तगत अपराध करार दिया है। हम सभी को इस निर्णय का स्वागत करना चाहिए। यह निर्णय किसी विशेष सम्प्रदाय, जाति या समाज का न होकर समस्त मानवता के लिए है क्योंकि भारतीय संस्कृति वेदों पर आधारित संस्कृति है। वेद समस्त विश्व की धरोहर हैं। इनमें मानवीय विज्ञान की अभूतपूर्व व्याख्या है जिसके अनुसार समलैंगिकता मनुष्यता का कृत्य न होकर पशुता का कृत्य है और अमानवीय तथा अनैतिक आचरण है। अपनें आपको सामाजिक कार्यकर्ता कहने वाले, आधुनिकता का दामन थामने वाले एक विशेष बुद्धिजीवी वर्ग के द्वारा सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय को हताशापूर्ण बताया जा रहा है। इस फैसले का अधिकतर धार्मिक संगठनों ने स्वागत किया है। उनका कहना है कि करोडों भारतियों का जो नैतिकता में विश्वास रखते हैं उनकी भावनाओं का आदर है क्योंकि समलैंगिकता के द्वारा सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। प्रकृति ने मानव को केवल और केवल स्त्री-पुरूष के मध्य सम्बन्ध बनाने के लिए बनाया है। इससे अलग किसी भी प्रकार का सम्बन्ध अप्राकृतिक एवं निरर्थक हैं चाहे वह पुरूष-पुरूष के मध्य हो या स्त्री-स्त्री का हो वह विकृत मानसिकता को जन्म देता है। कुछ लोगों द्वारा समलैंगिकता के समर्थन में खजुराहों की नग्न मूर्तियां अथवा वात्सायन के कामसूत्र को भारतीय संस्कृति और परम्परा का नाम दिया जा रहा है जबकि सत्य यह है कि भारतीय संस्कृति का मूल सन्देश वेदों में वर्णित है। वेदों की संस्कृति को भूलकर विकृत मानसिकता वाले लोग इस अप्राकृतिक कृत्य का समर्थन कर रहे हैं। हमारी संस्कृति में शिक्षा दी जाती है कि आचार: परमो धर्म: अर्थात सदाचार परम धर्म है और आचारहीनं न पुनन्ति वेदा: अर्थात् आचार से हीन मनुष्य को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। अत: वेदों में सदाचार, पाप से बचने, चरित्र निर्माण, ब्रह्मचर्य आदि पर बहुत बल दिया गया है। इसलिए समलैंगिकता को समर्थन देना समाजिक व्यवस्था को भंग करना है। समलैंगिकता को समर्थन देने से हम आने वाली पीढ़ीयों को संस्कारवान तथा चरित्रवान नहीं बना सकते। अगर हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को चरित्रवान बनाना चाहते हैं तथा सभ्य समाज का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें इस विकृत मानसिकता से बचना होगा और सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय को हमें सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया

पिछले दिनों आर्य समाज सुल्तानपुर लोधी जिला कपूरथला में ऋषि निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रात:काल चार बजे प्रभात फेरी का आयोजन किया गया, जो शहर की गलियों से होती हुई आर्य समाज मन्दिर में सम्पन्न हुई। तत्पश्चात आर्य समाज के हाल में हवन का आयोजन किया गया। ऋषि दयानन्द सरस्वती जी के गुणों का गान किया गया और प्रभु भक्ति के गीत गाए। यज्ञ में ऋषि भक्तों ने भारी संख्या में भाग लिया। यज्ञ के पश्चात आर्य समाज के प्रतिष्ठित सदस्य श्री सागर चन्द जी ठुकराल ने ऋषि के उपकारों का स्मरण करते हुए प्रवचन दिया। तत्पश्चात आर्य समाज के प्रचार मन्त्री श्री देवेन्द्र कुमार जी सेठी ने प्रभु भक्ति का भजन सुनाया और हम ऋषि दयानन्द जी के स्वपनों को साकार करेंगे विषय पर प्रवचन दिया। इस अवसर पर सर्वश्री अनीश पसरीचा, विवेक भूषण, आनन्द मोहन चावला, नरेश सेठी, सागर चन्द ठुकराल, देवेन्द्र सेठी, नरेश पसरीचा, वीरेन्द्र पसरीचा, अविनाश ठुकराल, सूरज प्रकाश, प्रदीप बजाज, मनोज बजाज संजय शास्त्री आदि ने परिवार सहित भाग लिया।

-देवेन्द्र कुमार सेठी प्रचार मन्त्री आर्य समाज

वेद वाणी

ये ते पवित्रमूर्मयो अभिक्षरन्ति धारया।
तेभिर्नः सोमः मृळय॥

-ऋ० ९।६१।५ ; सा० उ० २।१।५।२

विनय मानसरोवर में कुछ-न-कुछ तरंगें सदा उठा ही करती हैं। चारों तरफ होने वाली घटनाओं से मनुष्य का मानस-सर नाना प्रकार से क्षुब्ध होता रहता है। परन्तु हे सोम ! मैं अपने मानस को पवित्र बना रहा हूँ। इसलिए पवित्र बना रहा हूँ जिससे कि इसमें तेरी जगत्-व्यापक धारा से आई हुई तरंगें ही पैदा हों; अन्य किसी प्रकार की क्षुद्र तरंगें न पैदा हों। हे सोम ! अपनी शीतल सुखदायिनी और ज्ञानामृतवर्षिणी धाराओं से तुमने इस जगत् को व्याप्त कर रखा है। इन्हीं द्वारा यह जगत् धारित हुआ है, नहीं तो इस जगत् का सब जीवन-रस न जाने कब का सूख चुका होता ? मैं देखता हूँ कि तुम्हारी इस जीवन-रसदायिनी दिव्य धारा का मनुष्यों के पवित्र हुए अंतः करणों के प्रति एक आकर्षण उत्पन्न हो जाया करता है। जैसे कि चन्द्रमा के (भौतिक सोम के) आकर्षण से समुद्र-जल में ज्वारभाटा उत्पन्न होता रहता है, उसी तरह हे सच्चे सोम ? मनुष्य के पवित्र हुए मनः सरोवर में भी तेरी सोमधारा के महान् आकर्षण से उच्च तरंगें उठने लगती हैं, ऊँचे-ऊँचे व्यापक सनातन भावावेश (Emotions) उठने लगते हैं। विश्वप्रेम, वीरता, अदम्य उत्साह, सर्वार्पण कर डालने की उमंग, दुःखित-मात्र पर दया, इत्यादि ऐसे सनातन व्यापक भावावेश हैं जो कि तेरी जगत्-धारक महान् धारा के अनुकूल हैं। बस, पवित्र हुए अंतः करणों में तेरी महाशक्तिमती धारा के अनुसार ये ही तेरी उर्मियाँ, तेरी तरंगें अभिक्षरित हुआ करती हैं। हे सोम ? मुझे अब इन्हीं सत्यमयी व्यापक तरंगों के मन में उठने से सुख मिलता है। वे राग-द्वेष की हवा से उठने वाली क्षुद्र भावावेशों (Emotions) की तरंगें, वे मन को क्षुब्ध करने वाले एक पक्षीय ज्ञान से होने वाले छोटे-छोटे अनुराग, मोह, शंका, भय, उत्कंठा, कामना आदि की तरंगें मुझे सुख नहीं देतीं, किन्तु क्लेशरूप दिखाई देती हैं। इसलिए हे मेरे सोम ? मेरे मानस में उन्हीं तरंगों को उठाकर मुझे सुखी करो जो तंरगें पवित्र हृदयों में तुम्हारी धारा से उठती हैं। बस, ये ही उच्च भावावेश, ये ही व्यापक सनातन महान् भावावेश, मेरे मानस में उठा करें-ये ही तरंगें बार-बार उठें, खूब उठें, खूब ऊँची-ऊँची उठें-ऐसी ऊँची और महान् उठें कि इन आनन्ददायक भावावेशों में उठता हुआ मैं तन्मग्न होकर तेरी ऊँचाई के संस्पर्श का सुख अनुभव कर सकूँ।

साभार-वैदिक विनय, प्रस्तुति-रणजीत आर्य

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर लसूड़ी मोहल्ला, बस्ती दानिशमंदा जालन्धर शहर का वार्षिक उत्सव 22-12-2013 से 29-12-2013 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री जी के उपदेश तथा भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के मधुर भजन होंगे। 15-12-2013 से 22-12-2013 तक प्रातःकाल 5:30 से 7:00 बजे तक प्रभात फेरियां निकाली जाएंगी। मुख्य कार्यक्रम 29-12-2013 को होगा। यज्ञ की पूर्णाहुति प्रातः 10:00 से 11:00 बजे तक होगी तथा यज्ञ के ब्रह्मा श्री विजय कुमार जी शास्त्री होंगे। पूर्णाहुति के पश्चात ध्वजारोहण आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के कर कमलों द्वारा किया जाएगा। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बाबू सरदारी लाल जी वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब करेंगे। आर्य प्रतिनिधि पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी, रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद श्री अशोक परूथी एडवोकेट जी तथा उपप्रधान श्री देवेन्द्र शर्मा जी मुख्य मेहमान होंगे। कार्यक्रम का समापन 2:00 बजे होगा तथा इसके तत्पश्चात ऋषि लंगर होगा। आप सभी धर्म प्रेमी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर उत्सव की शोभा को बढाएं।

-यशपाल आर्य प्रधान आर्य समाज

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्वयनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।